आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 8-9 अप्रेल-मई, 2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

कोरोना से बचाव ही उपचार है।

प्रिय पशुपालक एवं किसान भाईयों व बहनों,

राम–राम सा।

कोविड–19 महामारी की आपदा से हम सभी त्रस्त हैं। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए लॉकडाउन देश और प्रदेश में लागू किया गया है। इस महामारी से बचाव के लिए कोई दवा उपलब्ध नहीं है। अतः ऐसी स्थिति में इससे बचने के लिए किसान एवं पशुपालक भाई–बहनों को अपने स्तर पर पुख्ता इंतजाम करने आवश्यक हैं। लॉकडाउन की स्थिति में भी पालतु पशुओं के देखरेख करना हमारी प्रमुख जिम्मेदारी है। पशुपालन से हमको नियमित आमदनी प्राप्त हो रही है। पशुओं की चराई, दाना–बांटा देना और दूध दोहने जैसे कार्य हर रोज करने पड़ते हैं। इसके अलावा दुग्ध उत्पादों के विपणन की जिम्मेदारी भी पूरी करनी होती है। इन सभी कार्यो में साफ–सफाई के साथ–साथ बीमार पशुओं का समुचित उपचार, टीकाकरण जैसे कार्यो में कोई कोताही नहीं बरतें। अतः कोरोना से बचाव के लिए आपस में सामाजिक दूरी रखनी जरूरी है। सर्दी–जुखाम और छींक आदि से पीड़ित व्यक्ति से दूरी बनाएं रखना जरूरी हैं। घर से बाहर निकलने पर मॉस्क का उपयोग अवश्य करना चाहिए। अनजाने में यदि ऐसी वस्तुओं को छूते है जिन्हें दूसरे लोगों ने भी छुआ हो तो घर आकर सबसे पहले साबुन से कम से कम 20 सैकेण्ड तक अपने हाथ धोएं। आंख, नाक व मुंह पर अनावश्यक रूप से हाथ न लगाएं। अंजान वस्तुओं को नहीं छूना चाहिए। पशु तथा उसके आसपास के स्थान की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। पशुपालन व खेत में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए मास्क, साबुन, सैनेटाईजर व पानी की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए साथ ही पशुघर व खेत में काम करने वाले व्यक्तियों में कम से कम 2 गज की दूरी बनाये रखनी चाहिए। बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखकर उनका उचित उपचार एवं देखभाल करनी चाहिए। पशुओं को बांधने की सांकल, रस्सी और दूध दुहने की सामग्री और बर्तनों को भली प्रकार से संक्रमण मुक्त कर लें। स्वंय को स्वस्थ बनाए रखने के लिए ताजे फल और सब्जियों का सेवन करें। कोविड–19 एक संक्रामक और जानलेवा बीमारी है। अतः पूरी सावधानी पूर्वक इससे बचाव के उपायों का पालन कर चिकित्सकों और सरकार के निर्देशों की पालना भी सुनिश्चित करें। कोरोना से बचाव ही उपचार है।

अतः आप इससे बचाव के तमाम तोर–तरीकों को अपनाएं।

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

मुर्गीपालन पर प्रशिक्षण

युवाओं में दक्षता संवर्द्धन से रोजगार के अवसर होंगे सुलभः कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद् के सौजन्य से 20 युवाओं का लघु मुर्गीपालन पर 30 दिवसीय प्रशिक्षण मार्च माह में वेटरनरी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हो गया। प्रशिक्षण का शुभारंभ करते वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि भारतीय कृषि कौशल परिषद्, भारत सरकार का एक अंग है जो किसानों, पशुपालकों और युवाओं की दक्षता संवर्द्धन का कार्य कर रही है। लघु मुर्गीपालन व्यवसाय के लिए 30 दिन की अवधि में पशुपालन की विशेषज्ञ सेवाएं और तकनीक से सभी पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकेंगे। कुक्कुट पालन व्यवसाय से स्वरोजगार शुरू कर समाज में अपनी उपयोगिता सिद्व करने का सुनहरा अवसर मिलेगा। कुलपति प्रो. शर्मा ने इस अवसर पर प्रकाशित एक प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन किया। विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा शुरू लघु पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की जानकारी दी। प्रशिक्षण संयोजक डॉ. अरूण कुमार झीरवाल ने बताया कि प्रशिक्षण में सीकर, झुन्झुनू, चूरू, नागौर और बीकानेर जिले के बेरोजगार युवा और मुर्गीपालक भाग लिया।

विश्व वन्यजीव दिवस मनाया गया

विश्व वन्यजीव दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के वन्यजीव प्रबंधन एवं स्वास्थ्य अध्ययन केन्द्र द्वारा 3 मार्च को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। केन्द्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. तरूणा भाटी ने मातृसेवा सदन स्कूल में वन्य जीवों के महत्व और उनके संरक्षण पर छात्र–छात्राओं को अवगत करवाया। डॉ. दिवाकर ने वन्यजीवों के पारिस्थिकी तंत्र की जानकारी दी। सभी विद्यार्थियों को एक–एक वृक्ष लगाने की शपथ दिलाई गई।

नागरिक सुरक्षा के कार्यकर्ताओं को पशु आपदा प्रशिक्षण

नागरिक सुरक्षा के 36 कार्यकर्ता का पशु आपदा प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण वेटरनरी विश्वविद्यालय में संपन्न हो गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि कार्यकर्ताओं को आपदा स्थिति में पशुओं की सुरक्षा, प्राथमिक उपचार से सम्बद्ध जानकारी दी। प्रशिक्षित कार्यकर्ता आपदा काल में केन्द्र के विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम कर सकेंगे। केन्द्र के डॉ. सोहेल मोहम्मद और डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने विकसित तकनीकों की जानकारी दी।

पशुपालकों को घर बैठे ही मार्गदर्शन और सुझाव

वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर और अधिकारियों की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग बैठक कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में 15 अप्रेल को आयोजित की गई। बैठक में कोरोना वायरस प्रकोप के मद्देनजर 'लॉकडाउन' की स्थिति में ऑनलाइन विद्यार्थियों की कक्षाओं का संचालन और महाविद्यालयों में पशुओं की आपात क्लिनिकल सेवा कार्यों की समीक्षा की गई। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया की सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम की ऑनलाइन अध्ययन प्राध्यापकों द्वारा करवाया जा रहा है। इसके लिए विषयवार टाईम–टेबल बनाकर कक्षाएं सुचारू रूप से चल रही है। विद्यार्थियों को अपने घर बैठे चालू कक्षाओं के प्रति खासा उत्साह है और वे इसका पूरा लाभ उठा रहे हैं। कुलपति प्रो. शर्मा ने बीकानेर, जयपुर और नवानियां (उदयपुर) के महाविद्यालयों में पशुओं की विशेषज्ञ क्लिनिकल सेवा कार्यों की समीक्षा की और बताया कि तीनों स्थानों पर आपात पशुचिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। इससे संम्बधित जिले के पशुपालकों को लाभ मिल रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 14 जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा प्रत्येक जिले के किसान पशुपालकों के "व्हाट्स एप्प" समूह बनाकर मोबाइल के द्वारा जोड़े गए हैं। पशुपालकों को घर बैठे ही मार्गदर्शन और सुझाव वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण केंद्रों द्वारा व्हाट्सएप समूह के माध्यम से उपलब्ध दिए जा रहे हैं। कोरोना वायरस प्रकोप के मद्देनजर 'लॉकडाउन' की स्थिति में सामाजिक दूरी को अपनाते हुए पशुपालन का कार्य करने की सलाह व्हाट्सएप समूह के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि लॉकडाउन अवधि में उन्नत पशुपालन के लिए किसानों और पशुपालकों के लिए होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों को डिजीटल प्लेटफॉर्म पर शुरू किया जाना प्रस्तावित है।

पशुचिकित्सा महाविद्यालय, जयपुर को वी.सी.आई. की मान्यता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय, जयपुर (पी.जी.आई.वी.ई.आर.) की स्नातक डिग्री को भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है। भारत सरकार के मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन और डेयरी विभाग की भारत के राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना के तहत पशुचिकित्सा महाविद्यालय, जयपुर को वी.सी.आई. की अनुसूचि में शामिल किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने इस निर्णय को एक उपलब्धि बताते हुए कहा कि इससे केन्द्र एवं राज्य सरकार से अनुदान और सहायता राशि मिलने का रास्ता प्रशस्त हो गया है। अब इस महाविद्यालय का चहुँमुखी विकास संभव हो सकेगा।

विश्व पशुचिकित्सा दिवस : कुलपति का सम्बोधन

विश्व पशुचिकित्सा दिवस 25 अप्रेल को पूरे विश्व में मनाया गया। विश्व पशुचिकित्सा संघ और विश्व पशुस्वास्थ्य संगठन ने इस वर्ष विश्व पशुचिकित्सा दिवस को "पशु और मानव स्वास्थ्य में सुधार के लिए पर्यावरण संरक्षण" की थीम पर मनाने का फैसला किया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने शनिवार को विश्व पशुचिकित्सा दिवस पर पशुचिकित्सक समुदाय को बधाई देते हुए वेटरनरी स्नातक के विद्यार्थियों की वर्चुअल क्लास को सम्बोधित किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा की दुनिया में पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र परिवर्तन के दौर में पशुचिकित्सको की भूमिका महत्वपूर्ण है। पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन न केवल पर्यावरण के लिए आवश्यक है, बल्कि पशु और मानव कल्याण के लिए भी आवश्यक है। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य के तहत जब पूरी दुनिया कोविड 19 की महामारी के कारण कठिनाई से जूझ रही है, पशुचिकित्सको की भूमिका स्वयं को सुरक्षित रखते हुए इसे अपने पेशेवर कौशल को दिखाने के अवसर के रूप में लेना चाहिए। किसानों–पशुपालकों के बीच स्वच्छता और अन्य बचाव कार्यों में पशुचिकित्सक अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी रतनगढ़ (चूरू) में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 2 एवं 7 मार्च को गांव पारासर एवं धाना गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 5, 7, 12 एवं 16 मार्च को गांव अमरपुरा, 3 एमएल, पदमपुरा एवं सलेमपुर गांवो में तथा 6 मार्च को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4 एवं 6 मार्च को गांव बोरान एवं मगरीवाड़ा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6 एवं 7 मार्च को गांव खारी एवं रोझा में आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 56 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5 एवं 7 मार्च को गांव खुड़ासा एवं मालहिड़ा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 41 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 3 एवं 4 मार्च को गांव सोडा एवं गणेशपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 40 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 16 मार्च को गांव खारा गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 30 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 7 एवं 11 मार्च को गांव बागांतरी, सुरेला एवं मंडावरा गांवो में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 5 एवं 7 मार्च को गांव रसूलपुरा, सिंदावड़ी एवं सरलाई गांवों में तथा दिनांक 11 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 98 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4 मार्च को गांव खेरली में तथा 6 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, अजमेर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 16 एवं 17 मार्च को गांव कानाखेडी एवं नूदंरी मालदेव गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 45 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 12 मार्च को गांव बना का बास में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 15 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 13 मार्च को गांव टोडपुरा एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 27 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 11 मार्च को गांव फेफाना में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 36 किसानों ने भाग लिया।

पशुओं के उत्पादन रोग व उनसे बचाव

उत्पादन रोग मुख्यतः वे रोग होते है जो कि पशु के ब्याहने से पहले अर्थात ग्याभिन अवस्था में अथवा ब्याहने के बाद जब पशु उत्पादन योग्य हो जाता है उस वक्त पशु के शरीर की चयापचयी क्रियाओं मे गड़बड़ी से होते हैं। पशुओं में होने वाले मुख्य उत्पादन रोग मिल्क फीवर, किटोसीस, डाउनर काऊ सिन्ड्रोम, पोस्ट पारच्यरेन्ट हीमो ग्लोबीनयूरिया व हाइपोमेगनिश्चिम टेटेनी है जो कि मुख्यतः अधिक दूध देने वाली गायों व भैंसों में ब्याहने के कुछ दिनों बाद होते हैं। ये उत्पादन रोग देशी नस्ल के पशुओं की बजाय संकर नस्ल के पशुओं में अधिक होते हैं। जब पशु की दूध उत्पादन की क्षमता अधिक होती है उस वक्त पशु शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। अतः इन रोगों के रोकथाम में संतुलित आहार व पोषक तत्वों की एक अहम भूमिका है। प्रमुख उत्पादन रोग निम्न प्रकार हैं।

1. दुग्ध ज्वर (मिल्क फीवर) :

दुग्ध ज्वर मुख्यतः अधिक दूध देने वाली गायों व भैंसों में कैल्सियम की कमी से होने वाला एक उत्पादन रोग है जो कि पशुओं में भी कभी कभी गर्भावस्था में ज्यादातर ब्याहने के 72 घटों में होता है। यह एक खतरनाक रोग है व समय से उपचार के अभाव में पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

मुख्य लक्षण : प्रारम्भिक लक्षण में पशु अधिक उत्तेजित हो जाता है, तापमान सामान्य से कम हो जाता है, पशु अपनी गर्दन को एक तरफ मोड़कर निढ़ाल सा बैठ जाता है, आंखों की पुतलिया फैलकर बड़ी हो जाती है, अन्तिम अवस्था में पशु बेहोसी की हालत में सीधा लेट जाता है।

उपचार :दुग्ध ज्वर का उपचार अगर समय पर किया जाए तो पशु ठीक हो सकता है। इंजेक्शन केल्सियम बोरोगलूकोनेट 25 प्रतिशत–250 मिली लीटर नस में धीमी गति से व 200 एमएल चमड़ी के नीचे देना चाहिए। यह उपचार पशुचिकित्सक की सलाह पर व उनकी देखरेख में होना चाहिए।

रोकथाम व बचाव : इसकी रोकथाम के लिए पशुओं को गर्भावस्था में फॉस्फोरस देवें जिससे कैल्सियम व फॉस्फोरस (2:1) का अनुपात सामान्य रहे व कैल्सियम का मेटाबोलिज्म सही ढंग से हो सके।

पशु को ब्याहने के बाद केल्सियम सप्लीमेंट दें।

पशु आहार में एनायनिक साल्ट डालें।

2. किटोसिस या एसिटोनिमिया :

यह बीमारी आमतौर पर पशुओं में बहुत अधिक देखने को मिलती है। यह अधिक दूध देने वाली गायों व भैंसों में ग्लूकोज की कमी से होने वाला एक उत्पादन रोग है जो कि मुख्यतः ब्याहने के दो महीनों के बाद होता है। इसमें पशु में हाइपोग्लाइसीमिया, किटोनिमिया व किटोनुयूरिया अर्थात पेशाब में दूध में कीटोन बॉडीज उत्सर्जित होने लगती है। दूध उत्पादन में काफी कमी हो जाती हैं।

मुख्य लक्षणः पशु में एकाएक दूध में कमी आना, पशु दाना–बांटा खाना छोड़ देता है परन्तु पशु सूखा चारा खा लेता है, पशु में काफी कमजोरी आ जाती है, मीठी सिरका जैसी किटोन की विशेष गंध पशु के श्वांस, गोबर व मूत्र में आती है, पशु सूखा व कठोर मिंगने के रूप में गोबर करता है, कई बार पशु में तंत्रिका तंत्र में लक्षण भी आ जाते है

उपचारः किटोसिस के उपचार हेतु इंजेक्शन डेक्स्ट्रोज 50 प्रतिशत 500 मिली लीटर नस में इंजेक्शन लीवर एक्स्ट्रेक्ट10 मिली लीटर, सोडियम प्रोप्योनेट 100 ग्राम प्रतिदिन तीन दिन तक देवें।

रोकथाम/बचाव :गर्भावस्था में व पशु के बहने के बाद उसे संतुलित पौष्टिक आहार दें। पशु को भूखा न रखें व पशु को इस दौरान मक्का, गुड़ व खनिज लवण का मिश्रण दें।

3. खून मूतना या पोस्ट पारच्यूरेन्ट हीमोग्लोबीनुरिया (पी.पी.एच.)

खून मूतना अथवा पी.पी.एच. नामक बीमारी अधिकतर भैंसों में देखने को मिलती है। यह फॉस्फोरस की कमी से होने वाला खतरनाक रोग तथा ज्यादातर भैंसों में ब्याने के 2–4 सप्ताह के दौरान होता है। इसे आम भाषा में लहू मूतना या खून मूतना इसलिए कहा जाता है क्योंकि पेशाब के साथ लाल रक्त कणिकांए आने लगती हैं।

मुख्य लक्षण : इसमें पशु में हीमोग्लोबीनुरिया की वजह से मूत्र कॉफी कलर का आने लगता है, पशु में एकाएक दूध में गिरावट, पशु गोबर करते समय जोर लगाता है। पशु में खून की कमी हो जाती है, खून की कमी से मृत्यु हो जाती है।

उपचार :सोडियम एसिड फॉस्फेट 60 ग्राम नस में, 60 ग्राम चमड़ी के नीचे, एनएसएस में घोलकर लगावें तथा 60 ग्राम पशु आहार के साथ देवें। इंजेक्शन टोनोफोस्फोन 15 मिली लीटर पुठ्ठे पर लगावें। उपचार पशुचिकित्सक की सलाह से ही लेवें।

बचाव : जिन क्षेत्रों की मिट्टी में फोस्फोरस की कमी हो वंहा पशु के आहार के साथ फॉरस्फोरस देवें तथा पशु को गर्भावस्था में संतुलित आहार दें।

4. हाइपोमेगनिशियम टेटेनी :

यह रोग गाय, भैंस, भेड़ व बकरी व ज्यादातर संकर नस्ल के बछड़ों में रक्त में मैगनिशियम की कमी से होता है। इस रोग में पशु के रक्त में कैल्सियम , मैगनिशियम (सामान्य 6:1) का अनुपात अंसतुलित हो जाता है।

मुख्य लक्षण : बछड़ा सुस्त होकर पागलपन जैसे लक्षण दिखाने लगता है साथ ही लड़खड़ाहट, टेटेनी, लेटे अवस्था में पशु पैर पटकता है।

उपचार : मैगनिशियम सल्फेट (10–20% घोल) 200–300 मिली

लीटर चमड़ी के नीचे व इंजेक्शन कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट 450 मिली लीटर नस में धीमी गति से पशुचिकित्सक की देखरेख में देवें।

बचावः जिन क्षेत्रों की मिट्टी में मैगनिशियम की कमी हो वंहा के पशुओं के आहार में मैगनिशियम सल्फेट डालें।

5. डाउनर काऊ सिन्ड्रोम :

यह भी एक उत्पादन रोग है जो अधिक दूध देने वाले पशुओं में होता है। यह पशु के शरीर में केल्सियम, फॉस्फोरस व पौटेशियम इत्यादि की कमी से हो सकता है। मिल्क फीवर का सही समय पर ईलाज न होने पर भी यह उत्पादन रोग हो सकता है। लगातार पशु के न उठ पाने से उसकी तंत्रिकाओं व मांसपेशियों पर दबाव पड़ता है इससे उसको पेरिनियल व टिबियल नर्व पेरालिसिस भी हो सकता है।

मुख्य लक्षण : पशु उठ नही पाता, पिछले पैर काम नहीं करते, आगे वाले पैरों से रेंग कर चलने की कौशिस करता है इसे क्रीपर्स काऊ भी कहते हैं तथा लगातार बैठे रहने से घाव हो जाता है व उसमें कीड़े पड़ने की संभावना हो जाती है।

इसलिए पशुपालक को चाहिए कि उपरोक्त सभी तरह के उत्पादन रोगों व अन्य रोगों से भी बचाने हेतु पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने के लिए प्शुओं को नियमित रूप से आहार में खनिज लवण का मिश्रण देवें जिससे प्शु बीमार भी न पड़े तथा प्शुपालक को भी आर्थिक हानि का सामना न करना पड़ें।

उपचार : पशु में मिल्क फीवर का उपचार सही समय पर करने से पशु को डाउनर काऊ सिन्ड्रोम से बचाया जा सकता है। इसका कोई विशेष ईलाज नहीं है, इसमें लक्षणों के आधार पर ईलाज करना चाहिए। अतः इंजेक्शन कैल्सियम बोरोग्लूकोनेट 250 मिली लीटर धीरे–धीरे नस में व 200 मिली लीटर चमड़ी के नीचे इंजेक्शन ट्राइबीवेट (Tribivet) 20 मिली लीटर नस में देना चाहिए। पशु को स्लिग (एक प्रकार की चेनपुली वाली मशीन रूपी) की सहायता से समय–समय पर खड़ा करें व पशु के नीचे भूसा व पुराने गद्दे बिछावें

बचाव : पशु को गर्भावस्था में व ब्याने के बाद सतुंलित आहार देवें।

–डॉ. दीपिका गोकलानी एवं डॉ. सविता
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल कैसे करें

पशुपालक भाईयों, इस वर्ष अप्रेल माह तक भी कोई विशेष गर्मी नहीं पड़ी है और मौसम लगभग आरामदायक रहा है। लेकिन आगामी माह में गर्मी एकदम तेज होने की संभावना है जिसके कारण पशु एकदम जल्दी से अपने आप को वातावरण के अनुसार नहीं ढ़ाल सकते है और तेज गर्मी में सामान्यतः ''तापघात'' (हीट स्ट्रोक) के शिकार हो जाते हैं। तापघात से प्रभावित पशु की पहचान आसानी से की जा सकती है। प्रभावित पशु सुस्त होकर चारा कम खाने लगता है जिससे उसे पानी की भी कम आवश्यकता होती है, शरीर का तापमान बढ़ जाता है पशु को दस्त भी हो सकते है। दुग्ध उत्पादन में कमी हो जाती है और इन सबके कारण पशु में निर्जलीकरण (डी हाईड्रेशन) भी हो जाता है। यदि समय पर ऐसे पशु का उपचार ना किया जाये तो पशु की मृत्यु भी हो जाती है। अतः तेज गर्मी शुरू होते ही पशुपालकों को अपने पशुओं को तापघात से बचाने के लिए समुचित प्रबंध करने चाहिए और किसी भी प्रकार के नुकसान से बचना चाहिए।

पशुओं को तापघात से बचाने के लिए प्रबंधन :

1. पशुओं को दिन के समय छायादार पेड़ के नीचे अथवा छप्पर के नीचे बांधें।
2. पशुघर में हवा का आवागमन आवश्यक रूप से हो और घुटन व नमी भरा माहौल ना हो।
3. पशुओं को सीधा लू से बचायें। पशुधर के खिड़की दरवाजों पर पल्ली लटका कर लू से बचाया जा सकता है।
4. पशुओं को दिन में कई बार पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध करायें, ताजा ठण्डा पानी इस मौसम में पशु चाव से पीते है।
5. पशु को इस समय आसानी से पचने वाला बाटा दें।
6. यदि गर्मी में पशु को बुखार, दस्त एवं दुग्ध उत्पादन में कमी आदि के लक्षण हो तो तुरन्त निकटतम पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

भारतीय नस्ल की देशी गायों के ए-2 दूध एवं दुग्ध उत्पाद का महत्व

भारतीय संस्कृति में गाय को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इसे कामधेनू भी कहा गया है। इसका दूध बच्चों के लिए न केवल पौष्टिक माना गया है अपितु इसे बुद्धि के विकास में कारगर भी पाया गया है। सभी पशुओं में गाय के दूध को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भारत में देशी नस्ल की गाय पालने की परंपरा रही है तथा इसका दूध स्वास्थ्य हेतु बेहत्तर पाया गया है। देशी गायों के दूध में पाया जाने वाला एक विशेष प्रोटीन हद्य की बीमारी एवं मधुमेह से लड़ने में कारगर पाया गया है तथा यह प्रोटीन बच्चों के मानसिक विकास में भी सहायक होता है। शायद इसलिए ही गाय के दूध की तुलना मां के दूध से की गई है। भारतीय गायों की एक ऐसी विशेषता है जो दूनिया की अन्य गौ प्रजातियों में नहीं होती। भारतीय नस्ल की गायों का दूध अत्यंन्त गुणकारी है। साधारणतया दूध में 85 प्रतिशत जल होता है और शेष भाग में ठोस तत्व अर्थात लैक्टोज, प्रोटीन, खनिज व वसा जैसे तत्व होते है। दूध, प्रोटीन, कैल्शियम, राइबोफ्लेविन तथा विटामिन बी युक्त होता है। इसके अतिरिक्त इसमें विटामिन ए, डी, के और ई सहित फास्फोरस, मैग्रीशियम, आयोडीन जैसे कई अन्य खनिज पदार्थ पाए जाते है। गाय के ताजे दूध में कई एंजाइम तथा कुछ जीवित कायिक कोशिकांए भी होती हैं।

गाय के दूध में पाए गए प्रोटीन में लगभग एक तिहाई ''बीटा केसीन'' नामक प्रोटीन होता है। विभिन्न प्रकार की गायों में अनुंवाशिकता जैनेटिक कोड़ के आधार पर केसीन प्रोटीन अलग अलग प्रकार का हो सकता है। यह दूध की संगठात्मक रचना को प्रभावित करता है जिससे इसमें गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। दूध की गुणवत्ता के आधार पर ही उपभोक्ता इसे स्वीकार या अस्वीकार करते हैं। विदेशी गौंवश की अधिकांश गायों के दूध में बीटा केसीन ए1 नामक प्रोटीन पाया गया है। जब इस दूध को पीते हैं तो इसमें शरीर के पाचक रस मिल जाते हैं तथा पाचन क्रिया में इस दूध के ए1 बीटा केसीन नामक प्रोटीन की 67वीं कड़ी टूट कर अलग हो जाती है और हिस्टिडीन के कारण बी.सी.एम7 बीटा कैसो.मोर्फिन7 का निर्माण होता है। सात अमीनों अम्ल वाला यह प्रोटीन ही विभिन्न रोगों हेतु उत्तरदायी माना गया है। यह शरीर के सुरक्षा तंत्र को नष्ट करके अनेक असाध्य रोगों का कारण बनता है।

बीटा केसीन ए1 तथा ए2 में अन्तर :– लगभग 12 प्रकार के बीटा केसीन ज्ञात हुए हैं जिनमें ए1 तथा ए2 बीटा केसीन प्रमुख है। ए2 की एमिनो एसिड़ श्रृंखला कड़ी में 67 वें स्थान पर प्रोलीन होता है। जबकि ए1 बीटा केसीन में प्रोलीन के स्थान पर हिस्टिडीन नामक अमीनों अम्ल होता है। ए1 बीटा केसीन में यह कड़ी कमजोर होती है जो पाचन क्रिया के दौरान टूट जाती है और बीटा कैसोमोर्फिन7 का निर्माण होता है।

देशी गायों में मिलता है ए2 बीटा केसीन :– रिसर्च में पाया है कि देशी गाय से मिलने वालू दूध में ए2 बीटा केसीन नाम का प्रोटीन होता है। यह शरीर के लिए काफी फायदेमंद होता है जबकि संकर व अन्य विदेशी गायों के दूध में ए1 बीटा केसीन पाया जाता है।

ए2 दूध से लाभः– यह प्रोटीन केवल देशी गायों के दूध में ही पाया जाता है। ए2 बीटा केसीन नामक प्रोटीन न केवल शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता को बढाता है बल्कि दिल की बीमारी के खतरे को कम करता है। ए2 बीटा केसीन कैंसर रोग के खतरे को कम करता है। यह पाचन तंत्र के लिए बहुत लाभदायक है। न्यूजीलैंड के वैज्ञानिक केथ वुडफोर्ड ने अपनी किताब ''डेविल इन द मिल्क'' में लिखा है कि भारत की देशी नस्ल की गायों में ए2 बीटा केसीन प्रोटीन होता है जो मनुष्य के शरीर हेतु निरोगी एवं लाभदायक होता है। वहीं विदेशी नस्ल की गायों में ए1 बीटा केसीन पाया जाता है, जिसमें विभिन्न रोगों से लड़ने की क्षमता बहुत कम होती है।

कई ऐसे शोध हुए हैं जिनमें विदेशी गायों में मौजूद ए1 प्रोटीन से मानव शरीर में डायबिटीज, ब्लड प्रेशर आदि बीमारियों के होने सम्बधी तथ्य सामने आए हैं। देशी गायों का दूध बच्चों के मानसिक विकास में काफी सहायक हैं बच्चों को यह दूध आसानी से पच जाता है। हमारे देश में पाई जाने वाली विदेशी और संकर गाय दूध की उत्पादकता तो बढ़ाती है लेकिन गुणवत्ता केवल देशी गायों के दूध में ही होती है। करनाल स्थित आनुवांशिकी ब्यूरों के द्वारा किए गए शोध के अनुसार भारत की 98 प्रतिशत नस्लें ए2 प्रकार के दुग्ध प्रोटीन वाली होती है। इनके दुग्ध प्रोटीन की अमीनो एसिड़ श्रृंखला में प्रोलीन अम्ल 67 वें स्थान पर होता है और यह अपने साथ की 66वीं कड़ी के साथ मजबूती से जुड़ा रहता है तथा यह पाचन के समय टूटती नहीं है। 66वीं कड़ी में अमीनों एसिड ''आइसोल्यूसीन'' होता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भारत की 2 प्रतिशत नस्लों में ए1 नामक एलील विदेशी गोवंश के साथ हुए म्यूटेशन के कारण ही आया होगा। आनुवांशिकी ब्यूरों (एन.बी.ए.जी.आर., करनाल द्वारा भारत की 25 नस्लों की गायों के 900 सैम्पल लिए गए थे जिनमें से 97–98 प्रतिशत ए2 ए2 पाए गए तथा एक भी ए1 ए1 नहीं निकला। कुछ सैम्पल ए1 ए2 थे जिसका कारण विदेशी गोवंश से सम्पर्क होना बताया गया। भैंसों की शत–प्रतिशत नस्ले केवल ए2 बीटा केसीन युक्त दूध ही उत्पादित करती है। आजकल बहुत से उपभोक्ता जागरूक हो रहे हैं कि बाल्यावस्था में बच्चों को केवल ए2 दूध ही देना चाहिए।

विश्व बाजार में न्यूजीलेंड, आस्ट्रेलिया, कोरिया, जापान और अमेरिका में प्रमाणित ए2 दूध के दाम साधारण ए1 दूध के दाम से कही अधिक हैं। ए2 प्रोटीनयुक्त दूध देने वाली सर्वाधिक गाय भारतवर्ष में पाई जाती हैं। यदि हमारी देशी गोपालन की नीतियों को समाज और शासन का प्रोत्साहन मिलता है तो सम्पूर्ण विश्व के लिए ए2 दूध आधारित बालाहार का निर्यात भारत से किया जा सकेगा। यह एक बड़े आर्थिक महत्व का विषय है। आज देशी गाय को देश के आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य में वृद्धि करने हेतु एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाने लगा है, इससे देशी गायों के पालन पोषण को बढ़ा मिलेगा अपितु भविष्य में चयनित प्रजनन द्वारा इनकी उत्पादकता में भी आशातीत वृद्धि हो सकेगी।

–प्रो. बसन्त बैस,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका एवं मुँहपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चूरू, अजमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, अलवर
पी.पी.आर. रोग	बकरी	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, पाली, सिरोही, जयपुर, चूरू, सीकर, नागौर
गलघोंटू (इन दिनों वर्षा के साथ)	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, भीलवाड़ा, सीकर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, पाली, बून्दी, झुंझुनू, टोंक, हनुमानगढ़, कोटा, बारां
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जयपुर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, राजसमन्द, पाली, चित्तौडगढ, सीकर, श्रीगंगानगर
बॉटूलिज्म	गाय	जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, नागौर
न्यूमोनिक पास्चुरेलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, जालौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, धौलपुर, हनुमानगढ़, भीलवाड़ा, बारां, सीकर
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, बून्दी, अनूपगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, भरतपुर, सीकर
अन्तः परजीवी– गोलकृमि, पर्णकृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी,	बून्दी, चित्तौडगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, बारां,
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, टोंक, जयपुर, अलवर, बाड़मेर, जोधपुर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
तापघात व निर्जलीकरण	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए. के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो.अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

कृषि के साथ बकरी पालन अपना कर कामयाबी की इबारत बने ओमप्रकाश

बुलंद हौसलें से हमेशा नई उंचाई पर पहुंच सकते है और इस प्रकार विकास के नए आयाम बनते हैं। गांव हो या शहर कर्मठता, संसाधन के लिए लालायित नहीं होती बल्कि कर्मठ पुरूष संसाधन तैयार कर लेता है। इन बातों के जीते जागते उदाहरण हैं हनुमानगढ़ जिले से नोहर तहसील के गांव भुकरका निवासी ओमप्रकाश कटारिया। आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व, परपंरागत कृषि से निरन्तर होने वाली कम आय से परेशान ओमप्रकाश ने कुछ अन्य विकल्प अपनाने का विचार किया तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये जहां उन्हें बकरी पालन के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दी गई। 13 बकरियों से बकरी पालन की शुरूआत करने वाले ओमप्रकाश के पास आज 40 बकरियां और 8 बकरों का फार्म है। इनके पास मुख्यतः सभी बीटल नस्ल की बकरियां है। बीटल बकरी की सबसे अच्छी नस्ल होती है। इस किसान का फार्म देखने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं। ओमप्रकाश ने बतया कि बकरी पालन से उन्हें हर वर्ष चार लाख की अतिरिक्त आय प्राप्त होने लगी है। इनका कहना है कि कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के वैज्ञानिकों ने उन्हें बकरी पालन के बारे में तथा बकरियों में होने वाले टीकाकरण, दवाईयां और खुराक की जानकारी भी दी। बकरी पालन के साथ साथ व फार्म पर अजोला उगा रहे हैं तथा सहजन के 20 पौधे भी लगा रखे है। यह पशुओं के लिए अच्छी खुराक है। ओमप्रकाश बताते है कि बकरी पालन किसी भी सूरत में दूसरे कार्य से कम नहीं है। जरूरत है लगन, मेहनत और हीन भावना से उबरने की। समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर मे प्रशिक्षण लेने के बाद उनकी तकनीक एवं व्यवसाय में काफी निखार आया और हौसला भी बुलंद हो गया। आज वे खेती और बकरी पालन में इस तरह से रम गये है कि निराशा शब्द का उनकी जिंदगी में कोई मायने नहीं है। उनकी सफलता को देख कर आसपास के अन्य किसानों को भी ज्यादा आय प्राप्त करने तथा सफल होने का एक हौशंला मिला है। **सम्पर्क– ओमप्रकाश कटारिया**

निदेशक की कलम से...

डेयरी पशु आहार कैसे तैयार करें

प्रिय पशुपालक व किसान भाईयों और बहनों।

डेयरी पशु का स्वास्थ्य तथा उत्पादन मुख्यतया उसको दिये जाने वाले आहार की मात्रा व गुणवत्ता पर निर्भर करता है। केवल सन्तुलित आहार से ही अधिकतम दुग्ध उत्पादन लिया जा सकता है। दुग्ध उत्पादन का कुल लागत का 70–75 प्रतिशत खर्च आहार का आता है इसलिए दुग्ध उत्पादक का लाभ व हानि पशुओं को दी जाने वाली खुराक पर निर्भर करता है। किसान पशुओं को आमतौर पर एक ही तरह का चारा देते हैं जिससे पशु को सन्तुलित आहार नहीं मिल पाता और पशु का स्वास्थ तथा उत्पादन गिर जाता है। ऐसी स्थिति में पशुओं को वैज्ञानिक ढंग से खुराक देने का महत्व ओर बढ़ गया है ताकि किसान लाभप्रद उत्पादन प्राप्त कर सके। दुधारू पशुओं से क्षमता के अनुसार दूध प्राप्त करने के लिए लगभग 40–50 कि.ग्रा हरे चारे एवम् 2.5 कि. ग्रा दाने की प्रति किलोग्राम दूग्ध उत्पादन पर आवश्यकता होती है। यदि हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो तो दाने की मात्रा बढ़ाई जा सकती है। दाना मिश्रण बनाने की घरेलू विधि इस प्रकार है – 10 किलो दाना मिश्रण बनाने के लिए अनाज चोकर और खली की बराबर मात्रा (3.3 किलो ग्राम प्रति) डाल दें, इसमें 200 ग्राम नमक और 100 ग्राम खनिज मिश्रण डालें। दाना बनाने के लिए पहले गेहूं, मक्का आदि को अच्छा दरड़ लें और खली को कूट लें यदि खली को कूट नहीं सकते तो एक दिन पहले खली को किसी बर्तन में डालकर पानी में भीगों लें। अगले दिन उसमें बाकी अवयवों को (दाना, चोकर, नमक, खनिज मिश्रण) इसमें मिला के हाथ से मसल लें। इस दाने को कुतरे हुए चारे घास में मिलाकर पशु को खिला सकते हैं। दुधारू पशुओं को आहार उनकी दूग्ध आवश्यकता के अनुसार ही दिया जाना चाहिए। पशुओं का आहार संतुलित होगा जब उसमें प्रोटीन, ऊर्जा, वसा व खनिज लवण सही मात्रा में ही डाले जाए।

–प्रो.(डॉ.)अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098

मुस्कान !

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224